4

आह्वान

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• सस्वर काव्य-पाठ • उत्साहवर्धन	• कविता • आह्वान • उद्बोधन	• रूपक एवं दृष्टांत अलंकार • विस्मयादिबोधक शब्द	• निराशा से उबरना और उबारना • धर्म, मत एवं क्षेत्रीय भिन्नता को सकारात्मक बनाना

मूलभाव

यह कविता 1912 ई. के आसपास तब लिखी गयी, जब हमारा देश गुलाम था। देश के लोगों में हताशा, निराशा और निष्क्रियता थी। ऐसे में भाग्यवादी हो जाने का खतरा भी होता है। इस कविता में कवि ने भाग्य के भरोसे आलसी बनकर व्यर्थ बैठे रहने की जगह कर्मशील होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया है। जीवन में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक होता है। कवि ने देश के उत्थान के लिए लोगों में एकजुटता के आधार पर संघर्ष करने की भावना जगाने का प्रयास किया है। धर्म, संप्रदाय और क्षेत्रीय आधार पर भिन्नता किसी देश के विकास की राह में बाधा नहीं बन सकते, यदि उस देश के लोग एक होकर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

मुख्य बिंदु

- भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठना आलस्य की पहचान है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है, जो परिश्रमी एवं कर्मशील होते हैं।
- विकास करने के लिए कर्मशील होना आवश्यक है। संसार में अनेक देश ऐसे हैं, जो पहले पिछड़े थे, लेकिन अब अपनी कर्मशीलता के कारण विकसित हो गए हैं।
- आलस्य के साथ विकास संभव नहीं है।
- पतन के लिए भाग्य को दोष देना उचित नहीं है।
- विविधता में एकता है। एकजुट होकर ही देश का उत्थान संभव है।

आइए समझें

- कवि देश की गुलाम (परतंत्र) जनता को भाग्यवाद से मोड़कर उसमें कर्म, संघर्ष और परिश्रम की प्रेरणा जगाता है। वह इस बात पर बल देता है कि प्रगति के लिए उद्यम आवश्यक है। ऐसे लोगों का साथ भाग्य भी देता है। उदाहरण के लिए सामने रखा निवाला भी बिना उद्यम के मुँह में नहीं जा सकता।
- संसार में अनेक देशों के लोग अपने श्रम के कारण पिछड़ेपन से निकलकर विकास कर चुके हैं, जबकि जो देश आगे बढ़े हुए थे, वे पीछे पड़ चुके है और अपने पतन के लिए भाग्य और ईश्वर को दोष दे रहे हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति कर्म में विश्वास करता है। कर्म किए बिना कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार दीपक को

जलाने के लिए तेल की आवश्यकता होती हैं, उसी प्रकार कार्य में सफलता के लिए कर्म और परिश्रम की।

- भारत विविध धर्मों, मतों, संप्रदायों वाला देश है, लेकिन इस विविधता में भिन्नता ही नहीं, एकता भी है। एकता में शक्ति होती है। इसी शक्ति से देश का विकास होता है। कवि ने माला का दृष्टांत देकर यह स्पष्ट किया है कि विविधता में सुंदर एकता संभव है।

यह जानना ज़रूरी है

- जिस प्रकार साँचे के बिना मूर्ति नहीं बन सकती, उसी प्रकार कर्म और परिश्रम के बिना जीवन में लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- भारत का यह वैशिष्ट्य है कि इसमें अनेक धर्मों, मतों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते हैं। देश के उत्थान और विकास के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए।
- हताशा, निराशा और निष्क्रियता से ऊपर उठकर कर्मशील होने की प्रेरणा विकास या प्रगति के लिए आवश्यक है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- 'कर्म-तैल' और 'विधि-दीप' में रूपक अलंकार।
- दृष्टांत अलंकार का प्रयोग : भोजन का निवाला स्वयं मुँह में नहीं जाता।
- विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग : हा!

सराहना-पक्ष

- देश की जनता को उद्‌बोधन एवं उसका आह्‌वान।
- निराशा, आलस एवं अकर्मण्यता से ग्रस्त देश की जनता को जगाने का प्रयास।
- कविता के प्रारंभिक दो छंद उपदेशात्मक हैं, लेकिन अंतिम छंद में देश की जनता के साथ कवि भी शामिल है; इसलिए यह आह्‌वान की कविता है।
- आह्‌वानसूचक पदों का प्रयोग हुआ है! आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
- यह कविता उपर्युक्त बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ अपने प्रभाव के कारण यह कविता जिस समय लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

योग्यता बढ़ाएँ

- बहुत से लोग ऐसे भी रहे हैं, जो अंग्रेज़ों की गुलामी से देश को आज़ाद करने के लिए परिश्रम और संघर्ष कर रहे थे, आपसी भेद-भाव भुलाकर एकजुट हो रहे थे।
- रामधारी सिंह 'दिनकर' ने इस प्रकार की प्रेरणा देने वाली अनेक कविताएँ लिखी हैं।
- इतिहास में पहाड़ काटकर रास्ता बनाने के कई उदाहरण हैं, जो श्रम के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।
- स्वाधीनता-आंदोलन में देशभक्त ऐसी ओजपूर्ण कविताओं की पक्तियों को उत्साह और उमंग से गाते थे।
- एक समय भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था, लेकिन आगे चलकर दूसरे देश भारत से आगे निकल गये। निरंतर परिश्रम करके हम फिर से आगे बढ़ सकते हैं।
- एकता में शक्ति होती है। आपने एक कहानी पढ़ी होगी, जिसमें एकता के महत्त्व को बताने के लिए एक पिता अपने बेटों को एक साथ तीन लकड़ियों को मिलाकर तोड़ने के लिए देता है और वे उसे नहीं तोड़ पाते, जबकि अलग-अलग एक-एक लकड़ी को तोड़ देते हैं।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कविता का बार-बार सस्वर पाठ कीजिए तथा उसके मूल भाव को समझिए।
- प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, बोधगम्य एवं शुद्‌ध भाषा में दीजिए।

- कविता में आये कठिन शब्दों के अर्थ याद रखिए।
- महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदुओं को याद रखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. कविता में किन-किन दृष्टांतों का प्रयोग किया गया है? किन्हीं दो नए दृष्टांतों का प्रयोग कीजिए।
2. सांप्रदायिक भेद भाव किस प्रकार देश की प्रगति में बाधक है– उदाहरण देते हुए 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. अकर्मण्य अथवा आलसी लोगों के प्रति आपके क्या विचार हैं– तर्क देते हुए लिखिए।
4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कष्ट की स्थिति में प्रयुक्त नहीं होता–

   (क) हाय (ख) आह

   (ग) ओह (घ) अहा